IJAER/May-June 2017 /Volume-5/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी संवेदना और जीवन मूल्य

डॉ.प्रदीप कुमार मीना
हिन्दी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय
सवाई माधोपुर

समकालीन महिला हिन्दी लेखन की चर्चित तथा हिन्दी कथा साहित्य की विशिष्ट लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक से लेकर अब तक के राष्ट्रीय परिदृश्य पर जिस तरह से मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी सृजनात्मक ऊर्जा से साहित्य तथा समाज को आन्दोलित किया है और जनमन के जमे हुए संस्कारित चिन्तन में नवचेतना की हलचल उत्पन्न की है, वह अपने आप में क्रांति बीज के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय स्त्री–चेतना, सामाजिक यथार्थ एवं बुन्देलखण्ड की आँचलिक संस्कृति मैत्रेयी पुष्पा के लेखन को विशिष्ट बनाने वाले तीन महत्त्वपूर्ण कोण है।

व्यक्तित्व

उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ जिले के सिर्कुरा गाँव में 30 नबम्वर, 1944 को जन्मी मैत्रेयी पुष्पा का बचपन असाधारण परिस्थितियों के बीच बीता। गाँव व घर में कुछ भौतिक सम्पन्नता को जन्म के साथ लेकर आई बेटी के भीतर मैत्रेयी सी विदुषी बनने के अपने सपने की संभावना के साथ पिता ने नाम दिया 'मैत्रेयी'। उच्चारण की क्लिष्टता के चलते गाँव की महिलाओं ने अपनी सुविधा से पुष्पा नामकरण किया। इस प्रकार 'मैत्रेयी पुष्पा' नामके मेल से भावी लेखिका के नाम की नींव पड़ी। मात्र अठारह माह की अवस्था में पिता का साया सदैव के लिए दूर हो गया।

मैत्रेयी पुष्पा की माता कस्तूरी दृढ़ता से भरी महिला थी जिसने अपनी ताकत और बुद्धि के बल पर घोर रूढ़िगत समाज के बीच स्वयं को गैर–परंपरावादी, प्रगतिशील चेतना से युक्त स्त्री के रूप में स्थापित किया। हर प्रकार के विरोध, असहमति व कड़वाहट के बावजूद कस्तूरी ही वह शख्सियत थी जिसका सर्वाधिक प्रभाव मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व पर पड़ा। माता के निर्देशों व महिला मंगल में नौकरी ने जहाँ मैत्रेयी पुष्पा को अकेलेपन की विसंगतियों के सामने ला खड़ा किया वहीं आत्मनिर्भरता का पाठ भी पढ़ाया।

कृतित्व

दृढ़ साहसी माता का पोषण, ग्रामीण जीवन का अकृत्रिम परिवेश, वैवाहिक जीवन के अनुभव और पुरूष प्रधान समाज की रूढ़िग्रस्त परंपराओं ने मिलकर उनकी लेखिका का निर्माण किया।

समय–समय पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित मैत्रेयी पुष्पा आज स्त्री विमर्श के संदर्भ में मील का पत्थर साबित हो चुकी है। साहित्य के क्षेत्र में स्त्री–विमर्श का कोई पक्ष उनकी रचनओं का उल्लेख किए बिना संपूर्ण नहीं होता। विवाह के पश्चात् का पच्चीस वर्षीय शून्यकाल भी मैत्रेयी पुष्पा की चारित्रिक दृढ़ता व विद्रोह पर भारी नहीं पड़ सका। अपने लेखन के माध्यम से मैत्रेयी ने कट्टरवादी सामंती एवं समाजविरोधी ताकतों से खतरे की चुनौती को विशेष रूप से स्त्री परिप्रेक्ष्य में स्वीकार किया इसलिए रोहिणी अग्रवाल मानती हैं– "मैत्रेयी पुष्पा के ग्रामीण संस्कार, इज्जत और मर्यादा के नाम पर घिनौनी सच्चाइयों को मखमली आवरणों में ढाँपने का दोगलापन नहीं देते।"[1] ग्रामीण स्त्री जीवन के कड़वे–मीठे सच को उन्होंने न केवल अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया बल्कि अपने निजी अनुभवों को बेबाकी से आत्मकथा के द्वारा सबके सामने रखा।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी का परिवर्तित स्वरूप–

स्वतंत्रता और समानता को प्राप्त करने के लिए अतीत से लेकर अब तक स्त्री ने लम्बी यात्रा तय की है। स्त्री मुक्ति का प्रस्थान बिन्दु स्त्रियों द्वारा अपनी छवि और अपना कार्य दोनों के निर्धारण संबंधी अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार है। इतिहास गवाह है कि सत्ता और शासन ताकत देता है। युगों से स्त्री रियाया के रूप में इस पुरूष सत्ता के अधीन इच्छा, खुशी और सुख मान चुकी है। लेकिन परिवर्तन प्रकृति का नियम है, यह बात दीगर है कि नियमित गति से होने वाले परिवर्तन में स्त्री के हिस्से पक्षपात ही आया।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विधिवत् प्रारम्भ हुआ स्त्री–विमर्श स्त्री इतिहास और वर्तमान को एक स्वतंत्र अस्मिता देता है लेकिन स्वतंत्रता जोखिम से भरी होती है। पुरूष मानसिकता को विरोध पुरूष बनकर नहीं किया जा सकता। स्त्री के पास अपने तरह का व्यक्तित्व है जो पुरूष से बहुत भिन्न और विरोधी है। उसका सारा आकर्षण, उसके जीवने की सारी सुगन्ध उसके अपने होने में है, उसके निज होने में हैं। 'चाक' की सारंग लिंग भेद की विषमता से ऊपर उठकर न्याय और सच्चाई की लड़ाई लड़ने वाले श्रीधर को न केवल अपने मन में स्थान देती है बल्कि विवाहिता होकर भी अनुल्लंघ्य मर्यादाओं को तोड़ती है। चाक में

मैत्रेयी कहती है– "लोग माने न माने, स्त्री आदमी से दो गुना खाती है, चार गुना लज्जाशील, छः गुना हिम्मती और आठ गुना कामिन। तभी तो उसे गहनों से बाँध–छेद कर रखा जाता है।"[2]

'अगनपाखी' में भुवन व चन्दर के रिश्ते को व्याख्यायित करते हुए मैत्रेयी चन्दर की मनोव्यथा को स्वर देती हुई कहती हैं– "प्रगाढ़ता न हो तो प्रेम किस रूप में होगा? प्रेम हवाओं में नहीं होता, दो मनुष्यों में होता है।"[3] भुवन व चन्दर के रिश्ते में प्रेम अनैतिक है, क्योंकि भुवन चन्दर की मौसी है, यही नैतिक–अनैतिक का प्रश्न भुवन के जीवन को अभिशाप बना देता है। मैत्रेयी के अनुसार जो प्रेम स्त्री की मर्यादा, उसकी आजादी व स्वतंत्रचेता की परवाह न करे वह छद्म से भरा व स्वार्थी चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। दरअसल महिला लेखन में अभिव्यक्त होने वाली प्रेम की स्वच्छन्द क्रीड़ाओं को डॉ. रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में ठीक से समझा जा सकता है– "गौरतलब है कि महिला रचनाकारों का सैक्स चित्रण रतिक्रीड़ा का सामान नहीं जुटाता, उन सामाजिक विसंगतियों और अमानुषिकताओं की ओर संकेत करता है जो सदियों से उसकी मानवीय अस्मिता ओर अधिकारों का हनन कर रही है। ..... व्यक्ति से अपने वर्तमान और भविष्य को लेकर फैसले करने का अधिकार छीनने वाली व्यवस्था की निरंकुशता और अमानुषिकता से टकराना सर्वाधिक नैतिक मानवीय दायित्व है, क्योंकि स्वयं 'मनुष्य' हुए बिना मानव समाज और मानवता दोनों की परिकल्पना असंभव है।"[4] मैत्रेयी पुष्पा इस सच को बेबाकी से कहती है कि – "लीक तोड़ने वाले लेखक बदनाम होने के लिए अभिशप्त है।"[5] पुरूष समय व समाज को यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए कि सती, पतिपरायणा, सुशीला, दासी, सेविका, अनुगामिनी बनने और कहलाने के दिन अब लद गए। इसका तात्पर्य कदापि यह नहीं है कि वह भी सत्ता और सिंहासन को प्राप्त कर अपने ऊपर किए गए अत्याचार व शोषण का प्रतिरोध चाहती है। इस स्त्री का एक ही आग्रह है कि उसे उसका स्थान दिया जाए। निर्जीव वस्तु या जानवर की तरह हाँकी गई स्त्री अब नकेल पहनने को तैयार नहीं ळै। बिना किसी द्वेष या प्रतिरोध के वह अपने हिस्से की जमीन पर खड़ा होने का सुख अनुभूत करना चाहती है। वास्तव में मैत्रेयी पुष्पा का मुख्य उद्देश्य निर्बल, निर्धन, असहाय, पीड़ित की पैरोकारी करना है और क्योंकि स्त्री आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि इससे भी ऊपर, क्योंकि वे स्वयं एक स्त्री है, स्त्री होने की समस्त पीड़ा, दबाव और वेदना को झेल चुकी हैं इसलिए स्त्री के पक्ष में उनका स्वर कुछ अधिक ऊँचा या तीव्र हो जाता है।

संदर्भ

1. हंस, मई 2008, पृ. 60।
2. मैत्रेयी पुष्पा—चाक, पृ. 407।
3. मैत्रेयी पुष्पा—अगनपाखी, पृ. 54।
4. हँस, फरवरी 2009, पृ. 52, 53।
5. हँस, सितम्बर 2005, पृ. 31।